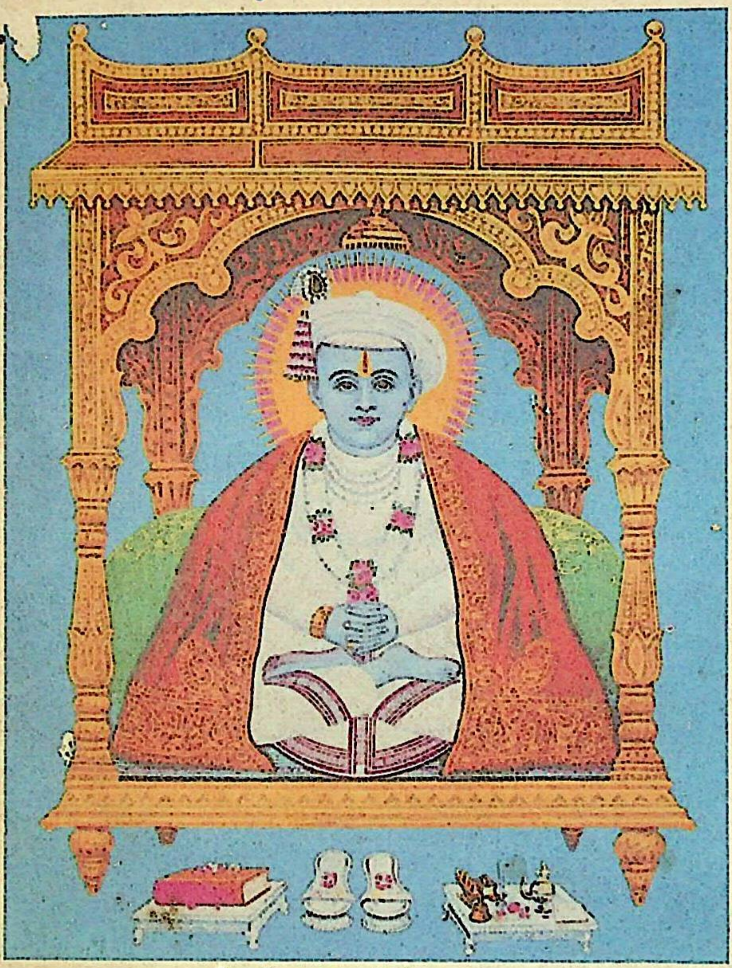
10.2

कैवल ज्ञान सम्प्रदाय

एक दर्शन



कैवलवेत्ता परम विशेष अंश

परमगुरु श्री करुणासागर महाराज

कैवल ज्ञानपीठ गुरुगादी सारसापुरी ता. आणंद, (गुजरात) ३८८ ३६५

अष्टादश खट नव मांही । ओर कतेब कुरान ॥
मोक्ष उधारे सबनमे । कही गये पक्ष पुरान ॥ १२ ॥

परमगुरु श्री करुणासागर कहते हैं कि अठारह पुराण, छ शास्त्र, नव व्याकरण और किताब तथा कुरान आदिमें सब पक्षकारोंने मोक्षपदको बाकाया रखकर सभी बातें कही है ।

उधारेका मोक्षमें । गाफल सो पतियाय ॥
वेत्ता सो वीलमें नहि जब लगी हाल न पाय ॥ १३ ॥

परंतु सिर्फ ग़ाफिल जीव ही उधारी मोक्षमें विश्वास करते हैं । जब तक प्रत्यक्ष मोक्ष प्राप्त न हो तब तक ज्ञानी (वेत्ता) पुरुष उसमें भटकते नहीं है ।

करमी गुरु उपदेशते । भवके भरम न जाय ॥
भूल्येहु जीव कही कलपके । उलटा रखेहु भूलाय॥ १२४ ॥

कर्मकांडी गुरुओं के उपदेश से जगत् के जीवों की भ्रमणा नष्ट नहीं होती । इसका यह कारण है कि अनेक कल्पों से जीव भ्रमणा ग्रस्थ है, और उसे ओर भ्रमित कीया गया है ।

बादल गुरु ग्यम ज्ञानसे कोउ न भये भवपार ॥
अवनि रची जीनु अबलगी । भटकत सब संसार ॥१२५॥

बादला गुरुओं की ज्ञानगम से कोई भी भवपारंगत नहीं हो सका । पृथ्वी की रचना हुई तभी से संसार के सब जीव भ्रममें भटका करते है ।

कैवल ज्ञान सम्प्रदाय एक दर्शन

भारत का इतिहास भव्य है ।
संस्कृति अद्वितीय है ।
संसार भर के देशों की द्रष्टि इसकी ओर लगी है ।

हिन्दू धर्म संसार के सभी धर्मों में अनन्य स्थान रखता है। जगत के सभी धर्मों का सारांश इसमें द्रश्यमान होता है। उपासना में विविधता है विविधता में भी एकता है । अनेक महापुरुषों ने अपनी द्रष्टि से समय-समय पर ज्ञान में कुछ-न-कुछ नवीनता प्रस्तुत की है। प्रत्येक हिन्दू उपासना और तत्त्वज्ञान में अपने ढंग से सम्पूर्ण स्वतन्त्रता रखता है ।

संवत् १८२९ की बात है ।
माघ सुद - २ की तिथि है ।

गुजरात की गर्वीली भूमि में चरोतर नामक रमणीय स्थान है। आणंद तहसील (तालुका) के सारसा गाँव में से बिलकुल सबेरे हेतबाई नामक स्त्री अपने पीहर जाने के लिए निकलती है। उसकी गोद में एकाध वर्ष का बालक है। क्षत्रिय कुल की नारी में निर्भयता की ओजस्विता (तेज) है । उसने विरासत में हिन्दू-संस्कार पाए हैं । रास्ता कच्चा है। वह अपने पिता के घर जा रही है। रास्ते में कासोर गाँव के पास एक छोटा-सा उपवन पड़ता है। रास्ते की बगान में सेर-तालाब स्थित है। उसे गले में प्यास का अनुभव होता है तथा पैरों में थकावट का अनुभव होता है ।

मार्ग की बगल में एक वृक्ष के नीचे अपने बालक को रखकर वह पानी के लिए तालाब की ओर जाती है। पीछे बालक की ओर पीठ घुमाती है। थोड़े-ही क्षणों में उसका प्यारापुत्र उसकी द्रष्टि से दूर हो जाता है। उपवन में न्हार नामक प्राणी का उपद्रव है, जो भेड़िया और सियार के मध्य का लुच्चा और हिंसक प्राणी है ।

एकाध न्हार की द्रष्टि बालक पर पड़ती है। वह प्राणी जल्दी से बालक को लेकर भागता है । केवल क्षण मात्र में बिजली की गति के समान यह घटना घट जाती है ।

हेतबाई हाथपैर धोकर थोडा जलपान करके वापस आती है। उसकी द्रष्टि वृक्ष के नीचे जाती है । बालक वहाँ उपस्थित नहीं है । इससे माता के ह्रदय पर कठोर आघात लगता है ।

माता का ह्रदय व्यथा से भर जाता है। आँखों से आँसू गिरते हैं । थोड़े समय का आनन्द लुप्त हो जाता है । तालाब का पानी दुःख का सागर बन गया। हेतबाई के शरीर की शक्तिमानो पानी बनकर बह गई ।

आँखों में आँसू भरकर वह स्त्री अपने बालक को वृक्ष-वृक्ष और पत्ते-पत्ते में ढूँढती है ।

उसकी द्रष्टि एकाएक पद्मासन लगाकर बैठे हुए दस-बारह साल के एक बालक पर पड़ती है। बालक हिमालय जैसा अटल है। उसकी आँखे बन्द हैं, मुख तेजोमय है तथा वह पद्मासन लगाए हुए है ।

हेतबाई इस बालमुनि के दर्शन से अपने सभी दुखों को भूल जाती है। वह बालक के सामने ध्यानस्थ होकर स्थिर होती है, उसकी उपस्थिति बालक का ध्यान भंग करती है। वह धीरे से अपनी आँखे खोलता है, उसकी प्रेमपूर्ण द्रष्टि हेतबाई पर छाजाती है ।

शांत और गंभीर वाणी से बालमुनि हेतबाई को आश्वासन दते है ।

"हेतबाई, तू दुःखी मत बन । तूने अपने बालक को गँवाया नहीं है (बल्के) पाया है । मेरा विश्वास कर, मैं असामान्य बालक हूँ। समस्त संसार की आधि-व्याधि और उपाधि से मुक्त हूँ। मैं उसके प्रभाव में नहीं हूँ जिससे समग्र विश्व त्रस्त है । (मैं) प्रकृति का दास नहीं बल्के स्वामी हूँ ।"

पर सामने तो एक नारी - ह्रदय है। स्त्री-सहज स्वभाव से शंका उत्पन्न होती है, शायद वह बालक कोई भूत प्रेत तो नहीं है ना । दिव्य शक्ति से युक्त इस बालमुनि से हेतबाई का असमंजस छिपा नहीं रह पाता । बालमुनि शंका का समाधान करने के लिए हेतबाई को पूर्व जन्म की याद दिलाते है ।

पालकी द्वीप के अरण्य में जब हेत बाई और उस का पति हरदेव ब्राह्मण और सुमन्ता माता के स्वरुप में थे, तब बालमुनिने उनके आतिथ्य का आनन्द पाया था। इसके बदले में उन्होंने मोक्ष माँगा था, तब वह कहता है "यह वचन

इस जन्म में नहीं बल्कि अगलेजन्म में पूर्ण करूँगा, यह वचन पूर्ण करने के लिए मैं आज आपके सामने उपस्थित हुआ हूँ" अन्त में हेतबाई को बालमुनि के वंचन में विश्वास होता है ।

बालमुनि आध्यात्मिक शक्ति से अपने शरीर को रुपान्तरित करता है। एकाध क्षण में (ही) बारह साल का बालक एक वर्ष के बालक में बदल जाता है। अब बालक का संपूर्ण शरीर हेतबाई के पुत्र की प्रतिकृति बन जाता है ।

हेतबाई बालक को अपनी गोद में लेती है और अपनी पिहर होकर ससुराल जाती है। सारसा में बालक का पालन होता है। सेर तालाब की सच्ची घटना गुप्त रहती है ।

छोटी सी उम्र में ही बालक की असामान्य आध्यात्मिक शक्ति के दर्शन होते हैं । बालक को लोग कुवेर नाम से जानते हैं । बचपन में ही यह बाल कुवेर संसार को त्याग कर संन्यास धारण करतें है। (वह) स्वयम् ज्ञानमार्गी है, परम पुरुष है तथा तत्त्वज्ञान, का गंभीर ज्ञाता है ।

फिर भी (वह) हिन्दुधर्म की परम्पराका सम्मान करते है और समर्थ गुरुको खोजते है। कृष्णस्वामी महाराज को गुरुपद पर स्थापित करते हैं । इस समय कृष्ण स्वामीजी की उम्र ७५० साल की थी, गुरुपद पर उन्हें स्थापित करने के बाद प्रेमपूर्वक, जगत् की नश्वरता और मोह का तत्त्वज्ञान स्वयम् समझाते हैं । अपने शिष्य कुवेर से प्रभावित होकर कृष्ण स्वामी महाराज अपने नश्वर शरीर का त्याग करते हैं ।

बालकुवेर जगह जगह प्रवास करके ज्ञानमार्ग का उपदेश देते है। उनका वतन सारसा ज्ञानमार्ग का मुख्य केन्द्र बनता है। सभी गाँवों से भक्त परमगुरु की वाणी से पावन बनते हैं । सारसा में भक्तों की भीड़ जमती है। उन महाशयने ज्ञान सम्प्रदाय की स्थापना की । अपने विचारों को प्रस्तुत करते हुए लगभग अठारह धर्मग्रंथ लिखे । आज भी सारसामंदिर में इन अठारहों धर्मग्रंथों की हस्तलिखित प्रतियाँ अस्तित्त्व में हैं ।

भारतीय संस्कृति की महानता विविधता में है । वर्षों से इस का प्रवाह बहे जाता है । काल के प्रवाह में हरदम समय की माँग के अनुसार इसने अपना स्वरुप प्रकट किया है और धर्म की घुराने इसका सतत वहन किया है ।

भावना से भरा, श्रद्धा से बाँधा मानव केवल गुरु के शब्दो को ही अन्तिम मानता है। उनके बतलाए मार्ग को दलील किए बिना स्वीकार कर लेता है।

अन्य मानव केवल कर्मकाण्ड को ही धर्म मानता है जीवन के आचार-मार्ग में धर्म की बतलाई हुई बातों को स्वीकार करता है, उपवास करता है (तथा) उपासना का आचरण करता है। (वह) दिनचर्या और उद्योग में धर्म के बंधनों को स्वीकार करके जीता है।

तीसरा वर्ग बुद्धिमानों का है। आज मनुष्यतर्क प्रधान बना है। विज्ञान की क्षितिजें विस्तृत हुई हैं। विज्ञानयुग का मनुष्य, बुद्धि स्वीकार न करे, ऐसी कोई बात मानने के लिए तैयार नहीं है।

पू. करुणासागरजीने इस मार्ग पर प्रकाश डाला। बुद्धि और तर्क की कसौटी पर चढ़ा कर तत्त्वज्ञान (को) शब्द बद्ध किया अठारह ग्रंथों में उन्होंने अपने विचार प्रकाशित किए, ईश्वर की तर्क पूर्ण वैज्ञानिक अभिव्यक्ति की और इस तत्त्वज्ञान का मार्ग "ज्ञानसम्प्रदाय" के नाम से विख्यात हुआ।

विराट् विश्व अनन्त है। आज तक विज्ञानभी असली गहराईओ को समज नहि सके। दुनिया का कोई प्रसंग कार्यकारण भाव के बिना संभव नहीं। प्रत्येक रचना के पीछे द्रश्य या अदश्य (रुपमें) उसका रचयिता अवश्य होता है। कुंभ को बनाने वाले प्रजापति कुंभ से भिन्न है। कुंभ के अन्दर तो केवल उसकी कला ही है। इसी तरह हजारों तारे, ग्रह, उपग्रह, नीहारिकाएँ वाले विश्वको बनाने वाला इन सबसे भिन्न है। जिस प्रकार हजारों सरिताओं का नीर इकट्ठा होने से और विश्व के समग्र बादलों के पानी से भर जाने के बाद भी जलधि की जलराशि तो उसी तरह की ही जान पड़ती है, उसी प्रकार कर्ता भी अनेक विश्वों की रचना के बाद या प्रलय के बाद भी उसी स्वरुप में बना रहता है।

हमारे जैसे अनेक ग्रह, उपग्रह धारण करने वाले विश्व में हमें छोड़कर अन्य किसी भी स्थान पर प्राणी बस्ती नहीं है, ऐसा मान नहीं लेना चाहिए। शायद किसी अन्य ग्रह पर हमसे भिन्न आकृतिवाला कोई प्राणी, यदि ईश्वर की कल्पना करे तो उसकी बुद्धि के अनुसार संभव है। हमारी बुद्धि की भी सीमा है। इसका सच्चा अर्थ हमारी समझ में नहीं आएगा। प्रत्येक विद्वान अपने से अधिक बुद्धिमानके समाने छोटा और अपरिपकव है।

हम "भगवान" शब्द का प्रयोग चौदह लोक के स्वामी अनंत ब्रह्मांडाधीश के लिए प्रयुक्त करते हैं । हम समझ न सकें ऐसे महान पुरुष में हम, भगवान के दर्शन करते हैं । यह वैज्ञानिक द्रष्टि से सत्य नहि है । श्रीमत् करुणासागरजी की द्रष्टि से सभी महापुरुष हैं, देव समान है, वंदनीय है । उनका जीवन एक उत्तम जीवन का निदर्शन मात्र है । उनकी उपासना नहीं की जा सकती और अनुकरणीय है । ईश्वर इतना सरल नहीं है जिसे हम जान सकें और इनता स्थूल नहीं है जिसे चर्मचक्षुओं से देख सके ।

भागवान के स्वरुप के बारे में परमगुरु करुणासागर का विचार निम्नलिखित है, उन्होंने भगवान के लिए पाँच विशेषण प्रयुक्त किए हैं ।

आद्य सक्रत स्वराज करुणेश कैवल भगवान

आद्य : जब पृथ्वी नहीं थी, जगत् का अस्तित्व नहीं था, विश्व का आविर्भाव नहीं हुआ था, ब्रह्माण्ड की रचना नहीं हुई थी, तब भी इसका अस्तित्त्व था ।

सक्रत : विश्व, तारे, ग्रह, उपग्रह, घूमकेतु, सजीव-निर्जीव सबकुछ इसी का कृत्य है, इसी की रचना है, इसी की कल्पना का स्वरूप है, इसी से ही इसकी रचना हुई है ।

स्वराज : समग्र ब्रह्माण्ड की छोटी-बड़ी सभी रचनाएँ स्वयम् इसी के द्वारा हुई है, इतना ही नहीं, बल्कि अपने नियंत्रणमें भी है । अणु अणु पर इसके "स्व" का राज है, सत्ता है ।

करुणेश : इतना होते हुए भी यह दया से भरा है, चींटी से लेकर ऐरावत तक सभी के साथ इसका दया से भरा संबंध है । प्रत्येक जीवात्मा प्रेम भाव से इसके साथ जुड़ सकता है, भावपूर्ण भक्ति से यह प्रत्येक के साथ संबंधित है ।

कैवल : जिस प्रकार सूत कातते हुए वृद्धामाता के हाथ की पूनी से निकलते तार में ऐंठन चढ़ती है । ऐंठन द्वारा रुई से तार का सर्जन होता है, पर सूत कातते यह हाथ में या स्वयम् वृद्धामाता में यह ऐंठन प्रवेश नहीं करती है । यह ऐंठन से पर है । इसी तरह (यह) जगत् समस्त आधि, व्याधि उपाधि काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर इत्यादि अनेक प्रकार की ऐंठनों से भरा हुआ है

पर इसमें से किसी भी प्रकार का मायावी बंधन कर्ता पर प्रभाव नहीं डालता। यह इन सबसे न्यारा है, पर है, संसार ऐंठन-युक्त है, जगन्नियन्ता इससे पर है

भगवान : उपर बतलाए हुए गुणयुक्त अनंत ब्रह्माण्डाधीश भगवान हैं।" ऐसे भगवान को मैं नमस्कार करता हुँ।", ऐसा परमगुरु कहते है।

परमगुरु का जीवन अनेक चमत्कारों से भरा है। जिन्हें हम आध्यात्मिक चमत्कार कहें ऐसे अनेक चमत्कारों से इनका जीवन भरा हुआ है।, फिर भी इन्होंने अपने ग्रंथों में इसकी स्पष्टता खूब ही की है। आग में चलना, जलपर चलना, मृत व्यक्ति को पुनर्जीवित करना तथा अनेक स्वरुप धारण करना इत्यादि बातें श्रेष्ठ गुरु के मार्गदर्शन में साधना करने वाला कोई भी साधक कर सकता है।

"में ये चमत्कार करता हूँ, अतः मुझे भगवान मत मानिएगा। भगवान मानकर कोई मेरा भजन मत कीजिए गा। मुझे याद करना होतो गुरु स्वरूपमें याद कीजिएगा।" फिर भी यदि

"हम जैसी तुम्हीं करो। तो तुम हम जैसे होय।"

ऐसा जतलाते हैं "मेरे समान जीवन जीकर मेरे समान हो सकोगे।" किसी मन्दिर में मेरी प्रतिष्ठा करके मूर्ति की सेवापूजा करने या आरती उतारने से मेरे समान नहीं हो सकते हो।

१०५ वर्ष का सम्पूर्ण स्वस्थ जीवन जीकर स्वेच्छासे अपने तमाम अनुयायियों से मिलकर इन्होंने संवत १९३४ में भाद्रपद सुदी पूर्णिमा के दिन अपने सभी शिष्यों के समूह की उपस्थिति में देहत्याग किया। इसके बाद इनके स्थान पर श्री नारायणदासजी आए।

आजकल ज्ञान सम्प्रदाय के गुरुपद पर सप्तम् कुवेराचार्य का स्थान प. पू. अविचलदासजी महाराज श्री शोभित कर रहे हैं।

२० वर्ष की छोटी उम्र में ही ये महाशय इस बडे उत्तर दायित्त्व के स्थान पर विराजमान हुए हैं। प्रथम भेंट में ही इनमें विद्वता के दर्शन होते हैं। इन्हें मिथ्या आडंबर का मोह नहीं है, कार्यभार की तनिक भी थकावट नहीं दीखती

। इन्हें चिंतन-मनन और पठन का शौक़ है। हिन्दू समाज के दुःख सदैव इनके मन के साथ जुड़े रहते हैं । इनमें भारतीय हिन्दू समाज को तेजस्वी और रोगमुक्त बनाने के लिए बड़े से बड़ा त्याग करने की तत्परता है। इनके मार्गदर्शन से सम्प्रदाय में विविध प्रकार की प्रवृत्तियाँ हो रही है।

(१) सम्प्रदाय के मन्दिरों में सभी गाँवों में भजनशालाएँ चलती हैं, वहाँ लोग रोज एकत्रित होते हैं । सब लोग मिलजुल कर परमगुरु रचित धर्मग्रंथों का पठन-मनन और चिंतन करते हैं तथा धार्मिक उत्सवों को मनाते हैं ।

(२) ३५ वर्षों से "कैवल ज्ञानोदय" नामक मासिक पत्रिका का प्रकाशन होता है जिसमें महापुरुषों के विचार, परमगुरु के धर्म ग्रंथों की टीकाएँ, जीवन-चरित्र, सुविचार तथा ज्ञानवार्ताएँ वगैरह प्रकाशित होते हैं । सम्प्रदाय के महत्त्वपूर्ण समाचार और प्रवृत्तियाँ भी इसमें शामिल की जाती हैं ।

(३) मृत्यु के बाद बारहवाँ, कांण-मांकण ? (मृत्युकेबाद की एक विधि जिसमें स्त्रियाँ छाती पीटती हैं तथा पुरुष कपडे से मुँह ढंकर दुःख व्यक्त करते हैं) जैसे प्रसंग बंद करके इनके बदले में तीन दिन का पारायण किया जाता है। सारसा से जाकार कोई एक संत पुरुष यह विधिकरवाता है तीनदिनों तक सांझ, सुबह व दो पहर को कथा वार्ता चलती है तथा सत्संग होता है और मृतात्माकी शांति के लिए उसके सभी स्वजन प्रार्थना और भजन करते है ।

(४) सारसा में एक पाठशाला की भव्य इमारत बनाई गई है जहाँ इस समय लगभग १५० बालक रहते हैं। इन्हें भारतीय संस्कृति के संस्कार दिए जाते हैं । मंदिर की ही सत् कैवल गौशाला की गायों का दूध (इन) बालकों को दिया जाता है ।

(५) भविष्यमें बालमंदिर से स्नातक कक्षा तक की पढ़ाई कराने वाले एक आदर्श भारतीय विद्यापीठ की स्थापना करने की प.पू. आचार्यजी की इच्छा है ।

(६) परमगुरु के प्रकट होने के स्थानपर स्थित बालकुंवेर मंदिर में एक वृद्धाश्रम बनाने का आयोजन भी हैं ।

(७) त्यागी-साधुओं के बदले भी काम कर सकने लायक गृहस्थों को तैयार करने के लिए धार्मिक परीक्षाएँ लेने तथा शिक्षण देने की योजना बनाई गई है। सात धार्मिक परीक्षाएँ उत्तीर्ण करने के बाद अभ्यासी "कैवल ज्ञान विशारद बनता है ।

(८) वर्ष में एकाधबार ध्यान और योगासन के वर्ग भी शिबिर के रुप में चलाये जाते हैं ।

(९) कैवल धर्म के ध्येय और प्रचार के लिए प्रति पाँच वर्षमें भिन्न-भिन्न स्थानों पर नेमी संमेलनों का आयोजन होता है।

(१०) नवयुवकों में सामाजिक, राष्ट्रीय तथा धार्मिक विकास हो, युवक सदाचारी बनें, इस हेतु से "कैवल ज्ञान युवा समाज" नामक संस्था चलाई जाती है । शिबिर सेमिनार, तालीमकक्षा वग़ैरह द्वारा युवकों को इस बारे में सूचना तथा तालीम दी जाती है ।

॥ सत् कैवल साहेब ॥

ज्ञान सम्प्रदायकी

आचार्य परंपरा



द्वितीय कुबेराचार्य
श्री नारणदासजी महाराज



सप्तम कुबेराचार्य
श्री अविचलदासजी महाराज



तृतीय कुबेराचार्य
श्री बलदेवदासजी महाराज



ज्ञान सम्प्रदायके प्रस्थापक
परमगुरु श्री करुणासागर महाराज



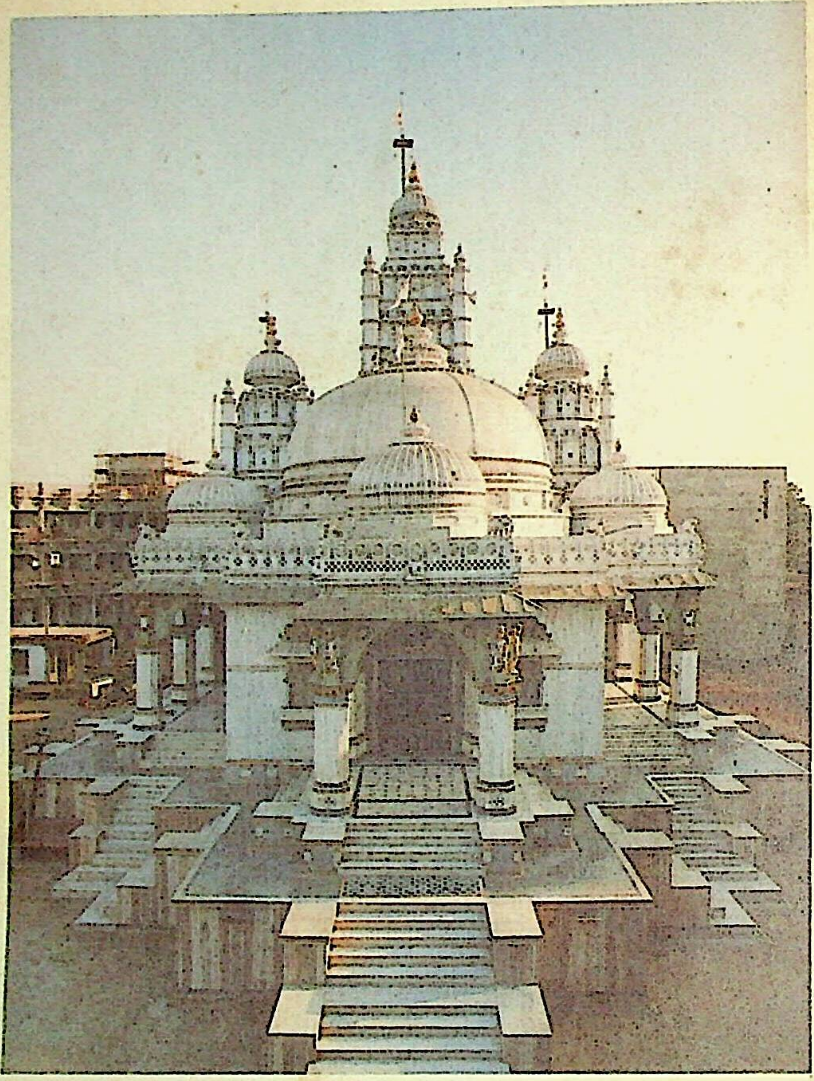
षष्ठम् कुबेराचार्य
श्री शितलदासजी महाराज



चतुर्थ कुबेराचार्य
श्री भगवानदासजी महाराज



पंचम् कुबेराचार्य
श्री प्रयागदासजी महाराज



कैवल ज्ञानपीठ गुरुगादी (सारसापुरी - ३८८ ३६५)

सारसापुरी